

भारतीय और प्रवासी हिंदी कथा साहित्य
वर्तमान परिदृश्य

संपादक
डॉ. मनप्रीत कौर

भारतीय एवं प्रवासी हिंदी कथा साहित्य: वर्तमान परिदृश्य

प्रधान संपादक

डॉ. विजय दाभोलकर

संपादक

डॉ. मनप्रीत कौर

संपादकीय परामर्श

डॉ. रतनकुमार पाण्डेय

डॉ. हूबनाथ पाण्डेय

डॉ. रत्ना शर्मा

डॉ. सुरेंद्र कौर

प्रा. अमित कुमार मिश्र

कला निर्देशक और अक्षर संयोजक
राजेश कुमार यादव
ई-मेल: rajeshy206@gmail.com

मूल्य:

500

मुद्रक:

ऑक्यूमेन, एम/सी/ ३०१,
न्यू एम.एच. बी. कॉलोनी,
गोराई रोड, बोरीवली (पश्चिम),
मुंबई - ४०० ०९२.

अनभै प्रकाशन

फ्लैट नं.-७, प्लॉट नं. १७७ शिवनेरी
बिल्डिंग, शबरी होटल के पास, सायन
माटुंगा रोड, सायन (पू),
मुंबई - ४०० ०२२

फोन: ०२२-२४०४००४९

ई-मेल: anbhair@gmail.com

ISBN 978-81-908663-1-6

अनुक्रम

१. इक्कीसवीं सदी की प्रवासी कहानी...	तेजेंद्र शर्मा	१०
२. प्रवासी हिंदी उपन्यास	सुषम बेदी	२०
३. विदेशों में हिंदी साहित्य सृजन	डॉ. उषा राजे सक्सेना	२८
४. तेजेंद्र शर्मा का कहानी संसार: सामाजिक सरोकार	डॉ. मनप्रीत कौर	३८
५. प्रवासी साहित्य में स्त्री चिंतन	प्रो. चंदा बेन	४३
६. प्रवासी लेखिकाओं की कहानियों का जीवन-सत्य	डॉ. मुदिता चंद्रा	५१
७. प्रवासी लेखिका स्नेह ठाकुर की कहानियों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश	डॉ. अनिल सिंह	६०
८. प्रवास-जीवन के संदर्भ में कथा लेखन के नये क्षितिज (साहित्य के झरोखे से)	प्रो. अरुण कुमार मिश्र	६५
९. अभिन्यु अनंत के उपन्यास: मजदूर विमर्श की बेबाक पहल	डॉ. भाऊसाहेब नवनाथ नवले	७१
१०. नरेंद्र कोहली के समकालीनों में उनके उपन्यास साहित्य का वर्तमान परिदृश्य: एक समीक्षा	डॉ. अल्लबक्श एच. जमादार	७७
११. प्रवासी साहित्यकार सुनीता जैन के कथा-साहित्य में नारी विमर्श	डॉ. दीप्ति रंजन बिसारिया	८१
१२. नॉस्टेलजिक भावावेश और स्त्री मन को चीन्हा कहानी संग्रह 'सपने मरते नहीं'	डॉ. राहुल पाण्डेय	८७
१३. कथा साहित्य में बदलती भाषा और उसका स्वरूप (कहानी के परिप्रेक्ष्य)	डॉ. निशा रम्पाल	९२
१४. प्रवासी हिंदी कथा साहित्य एक अनुशीलन (मॉरीशस व अमेरिका के संदर्भ में)	डॉ. आभा खेडेकर	९७
१५. स्त्री यथार्थ को उकेरता प्रवासी कथा साहित्य	डॉ. सुरेश कुमार केसवानी	१०१
१६. प्रवासी हिंदी लेखिकाओं की कहानियाँ- बुजुर्गों की व्यथा का दर्पण	डॉ. वर्षा शाह	१०६
१७. प्रवासी हिंदी कहानी और तेजेंद्र शर्मा की कहानियाँ	डॉ. राजेंद्र यादव	११०

प्रवासी साहित्य में स्त्री चिंतन

प्रो. चंदा बेन

प्रवासी उन्हें कहा जाता है जो अपने देश को छोड़कर दूसरे देशों में बस जाते हैं। भारतीय भी दुनिया के अनेक देशों में रह रहे हैं। प्रवासी अपने देश को छोड़कर जब दूसरे देश में बस जाते हैं तो उनकी स्थिति अनिश्चित होती है। 'अप्रवासी व्यक्ति उस देश में रह रहा होता है जो उसका अपना नहीं है यह स्थान उसकी जन्मभूमि से दूर होता है' (१) आज भारतीय अर्थव्यवस्था के बदलते स्वरूप और भूमंडलीकरण के कारण प्रवासी लेखन भी महत्वपूर्ण हो गया है। प्रवासी लेखिका उषा राजे सक्सेना के शब्दों में प्रवासी शब्द प्रवास का विश्लेषण है 'प्रवासी एक मनोविज्ञान है, एक अंतर्दृष्टि है जिसे स्वतः फारम्यूलेट होने में बरसों बरस लगते हैं।' स्वतंत्रता के पूर्व अंग्रेज भारत से गरीब और सस्ते मजदूर मॉरिसस त्रिनिडाड, गुयाना, सुरीनाम, कोलंबिया, जावा आदि देशों को ले गए। ये भारतीय अधिकांशतः, पंजाब उत्तर प्रदेश, बिहार और दक्षिण भारत के तामिल थे। गिरिमिटिया प्रथा समाप्त होने के बाद भी ये भारतीय वापिस

अपने देश नहीं आये और वहीं जीवन यापन करने लगे ये ही प्रवासी भारतीय कहलाये और अब उन्हीं के आगे की पीढ़ी को भारतवंशी कहा जाने लगा है। आज हिन्दी में प्रवासी साहित्य की चर्चा की जाने लगी है और चर्चा होनी भी चाहिए क्योंकि प्रवासी भारतीयों की संख्या करोड़ों में है और वे देश से बाहर रहकर भी हिन्दी भाषा और भारतीय संस्कृति का निर्वाह कर रहे हैं। आज प्रवासी साहित्य लेखन बड़ी मात्रा में हो रहा है। साहित्य को वैश्विक ऊँचाई पर ले जाने का कार्य भी प्रवासी साहित्य कर रहा है। प्रवासी साहित्य महत्वपूर्ण क्यों है ? प्रवास के दौरान व्यक्ति जिन समस्याओं से जूझता है, अपने देश और समाज से जब दूसरे देश और उसकी परिस्थितियों से समायोजन स्थापित करता है इसमें उसका पूरा जीवन और आने वाली पीढ़ियाँ जिन समस्याओं का सामना करती हैं और जो मूल्य बोध लेकर वे जाते हैं उनसे अलग मूल्यों को अपनाने की कशमकश निरंतर उसमें चलती रहती है। प्रवासी साहित्य इन्हीं मूल्यों को उजागर करता है। अपने देश से बाहर निकलते ही प्रवासियों को अनेकानेक समस्याओं से जूझना होता है सबसे पहले बीजा की समस्या के साथ ही आवास, नौकरी, भोजन अजनबीपन, नस्लवाद, भाषा, राजनीतिक तंत्र, भौगोलिक पस्थितियाँ आदि अनेकानेक समस्याओं से उन्हें गुजरना होता है। स्नेह ठाकुर लिखती हैं कि भारतीय तथा पश्चिमी समाज के बोलने का ढंग तथा बलाघात में भिन्नता होती है जिससे भी भारतीय पिछड़ जाते हैं। 'एक ही बात को कहने का भारतीय और केनेडियन ढंग फर्क-फर्क है। दूसरी समस्या आती है बलाघात की' २ विदेशियों और भारतियों में नौकरियों को लेकर प्रतियोगिता बढ़ती जा रही है इस कारण विदेशियों के मन में भेदभाव बढ़ता जा रहा है'' चमड़ी के रंग को नस्लवादी विचारों

से अलग नहीं किया जा सकता। इस तथ्य के लिए काफी गवाहियाँ मौजूद हैं कि सरकारें व्यक्तिगत राजसी नेता, मासमीडिया, फर्मों के मालिक मजदूर की समस्याओं में नस्लवाद देखा जा सकता है।” (३) इस प्रकार यह तो एक समस्या है प्रवासी भारतीयों के जीवन में अनेक चुनौतियाँ आती हैं जिनका उल्लेख आलेख में आगे आता रहेगा। आज हिन्दी साहित्य को भी विविध चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है जिस प्रकार भारतीय हिन्दी साहित्य में आज जो अभिव्यक्त विषय की वस्तु बदल गई है विश्व साहित्य में भी वे ही परिवर्तन दिखाई दे रहे हैं। आज हिन्दी के शीर्ष पर स्त्री और दलित विमर्श जोरों पर है। प्रवासी साहित्य में आज स्त्री विमर्श पर साहित्य लिखा जा रहा है। दरअसल समस्त विश्व में स्त्रियों की आधी आबादी की समस्याएँ कमोवेश एक जैसी ही हैं। परन्तु पश्चिमी समाज में जहाँ नारी आत्म निर्भर हुई है वहाँ उसमें नारी के शाश्वत जीवन मूल्यों के प्रति अस्वीकार की भावना ने भी जन्म लिया है फलस्वरूप इससे उत्पन्न समस्याओं को वह चुनौती के रूप में स्वीकार कर रही है।

भारतीय हिन्दी साहित्य में स्त्री चेतना, स्त्री विमर्श आदि शीर्षकों से स्त्री के समग्र जीवन और विविध समस्याओं पर निरंतर लिखा जा रहा है। वे ही सारी समस्याएँ प्रवासी साहित्य में दृष्टिगोचर होती हैं। मैं यहाँ ‘प्रवास में पहली कहानी’ शीर्षक पुस्तक जिसका संपादन उषा वर्मा (यू.के.) एवं चित्रा कुमार (यू.के.) ने किया है की विभिन्न कहानियों का उल्लेख करूँगी। संपादक उषा वर्मा लिखती हैं कि विदेश की धरती पर जब इन कथाकारों ने पहली कहानी लिखी तो अवश्य ही उनके स्थापित अनुभव यहाँ के अनुभवों से टकराए होंगे, उनकी जीवन पद्धति उनके संस्कारों का क्षय हुआ या इसके विपरीत उन्होंने जीवन की दूसरी पद्धति का स्वागत किया विशेषकर साठ सत्तर के दशक में जब पश्चिम में कुंठाओं, वर्जनाओं से लोग मुक्ति मांग रहे थे। इन कहानियों में उन लेखिकाओं का भोगा हुआ यथार्थ अपनी पूरी शिद्दत के साथ बोल रहा है” १४ संग्रह की पहली कहानी कहानीकार ‘अतिया खान’ उत्तर भारत की स्त्रियों की समस्या को उजागर करती हैं। ‘भिखारिन’ कहानी की नायिका एक सभ्य परिवार की महिला है जिसका पति उसे घर से बाहर निकाल देता है वह छुपती छुपाती लेखिका के घर के आस पास आकर उनसे खाने की दरकार करती है लेखिका न केवल उसे खाना देती है अपितु उसे अपने घर पर रख लेती हैं। वह इतनी डरी हुई है कि यदि उसे बाजार भी जाने को कहें तो कहीं भी बाहर जाने से घबराती है लेखिका पूछती है ‘तुम्हारा घर कहाँ है। मेरे आदमी ने दूसरी औरत कर ली और मुझे मारकर घर से बाहर कर दिया।’

‘जब भी इसके हालात मालूम करने की कोशिश करती वह चुप हो जाती, आँखें गमजदह हो जाती। जो जख्म वह दुनियाँ से छुपाना चाहती है उन्हें कुरदेने का मुझे क्या हक है एक बात मैंने देखी कि वह बाहर जाने से बहुत घबराती है। कभी बाजार से कोई चीज खरीदने के लिए भेजती तो उसकी आँखों में वही खौफ आ जाता जैसे एक हिरनी शिकारियों से बचने के लिए पनाह चाहती हो। घर में कोई मरद आता तो हमेशा बावर्चीखाने में जा बैठती। घोब्री और दूध वाले तक के सामने जाने से घबराती है’ ५ पति के द्वारा घर से निकाली गई स्त्री को इस समाज में कौन ? पनाह देता है ? न भाई-बहिन, न नाते रिश्तेदार बल्कि समाज अकेला जान उस पर क्या जुल्म करता है यह वही भिखारिन जानती है।

‘अमृता घोष (यू.के.) की कहानी ‘सर्द रात का सत्राटा’ में जहाँ स्कॉटलैंड की प्रकृति का बड़ा मनोहारी वर्णन किया गया है वहीं सरहदों के पार जाकर एक स्त्री की दूसरी स्त्री के अधिकारों का हनन करने और मुक्त जीवन की उत्कंठा और उसकी परिणति इस कहानी के माध्यम से अभिव्यक्त हुई है। नेहा मेधावी छात्रा है जो स्कॉटलैंड इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने गई है वहाँ परेश नामक भारतीय मूल के लड़के से उसकी मुलाकात होती है। दोनों अच्छे मित्र हैं। नेहा का मानना है कि पहले कुछ बन जाऊँ फिर परेश के प्रेम निवेदन को स्वीकार करूँगी। इसी बीच नेहा की बहिन तनु स्कॉटलैंड घूमने के लिए आती है ‘नेहा ने कहा-तनु यह है मेरा अभिन्न मित्र परेश। यह यहाँ मेडिसिन में डिग्री।’ तनु ने पूरा वाक्य सुने बगैर फुलझड़ी छोड़ी, अभी तक सिर्फ मित्र तक ही पहुँची हो, यहाँ आकर भी उतनी ही कायर रही जितनी भारत में थी। अरे ! दीदी थोड़ी खुली हवा में सांस लो न -मुक्त महसूस करो अपने को। यहाँ मम्मी-पापा या आर्य समाज वाली बातें नहीं हैं। ‘६ नेहा जब दो दिनों के लिए स्कॉटलैंड से बाहर जाती है और लौटकर आती है तब तक तनु और परेश हम बिस्तर हो जाते हैं। नेहा टूट चुकी है और अपने मित्र और बहिन को त्याग देती हैं। लेखिका कहती है कि समाज चाहे भारतीय हो या विदेशी आधुनिकता ने सारे मूल्य समाप्त कर दिए हैं केवल भोग की संस्कृति में नई पीढ़ी डूबकर सारे संबंधों को समाप्त करने में लगी है। पश्चिमी समाज की नई सोच के कारण स्त्री के मनोवैज्ञानिक स्वरूप में परिवर्तन आया है उसने परंपरागत स्त्री-मूल्यों को उतार फेंकने की भी ठान ली है। यह समस्या भारत और विदेश दोनों में एक सी है। लेखिका मूल्यों के क्षरण की कहानी कहती है।

‘कहानी कहीं खो गई है’ इरा सक्सेना (यू.के.) की कहानी है वे लिखती हैं कि स्त्री उत्पीड़न और शोषण सब समाजों में एक ही प्रकार के हैं। पुरुष का जब भी स्त्री से जी भर जाये उसका त्याग कर देता है फिर वह यह नहीं देखता कि उमर के किस पड़ाव पर यह हरकत कर रहा है। कथा नायिक मिसेज फिलिप्स उम्र दराज मिलनसार महिला है। वे आफिस में सबसे बात करती हैं लेखिका कहती है वे गुडमार्निंग के साथ ही घर में खिले फूलों तक की बातें करती हैं मगर आज मिसेज फिलिप्स को क्या हुआ कि बोलती ही नहीं ‘एकाएक मिसेज फिलिप्स ने मेरे दोनों हाथों को कसकर पकड़ लिया। हाथ कांप रहे थे। उनके होंट थरथराने लगे, काँपे स्वर में बाली ‘ओह सुनीरी ही डम्पड मी ऑफ्टर ३७ ईयर्स, ही डम्पड मी।’ ‘क्या मुझे यकीन नहीं हुआ क्योंकि कुछ लोग व्यक्ति नहीं दंपति होते हैं एक दूसरे से अलग उनका अस्तित्व नहीं होता। एक दूसरे के लिए और एक दूसरे के संग होते हैं। मिसेज फिलिप्स भी उन्हीं में से थी। - यह सच है बॉव मुझे छोड़ गये’।-कल ही मुझे अपना फैसला सुनाया। एक पैंतीस साल की लड़की के लिए मुझे सदा के लिए छोड़ने का ऐलान करके चले गये।’ ७ वे कहती हैं कि मत पुकारो मुझे मिसेज फिलिप्स, ऐलिस कहो। सिर्फ ऐलिस। खो गया है मेरा नाम मेरा अस्तित्व। चाहे भारतीय समाज हो या अन्य स्त्री सभी समाजों में अपने पति के नाम और उसके रूतवे से जानी जाती हैं। पुरुष प्रधान समाज का पति इन सारी बातों को जानता है परन्तु अपनी दैहिक इच्छाओं की पूर्ति के लिए समस्त संबंधों को तिलांजलि देकर दूर हट जाता है। अब बुढ़ापे में त्यागी हुई मिसेज फिलिप्स कहाँ जाये ? स्त्री चाहे आर्थिक रूप से सम्पन्न क्यों न हो परन्तु उसके परिवार का बिखर जाना यह घटना उसके जीवन

में कभी भी घटित हो सकती है। चाहे परंपरावादी समाज हो या यू.के. का आधुनिक समाज स्त्री शोषण के सारे आयाम एक जैसे हैं।

उषा वर्मा (यू.के.) की कहानी 'सलमा' में प्रवासी जीवन की अनेक समस्याओं को उकेरा गया है और साथ ही स्त्री शोषण और स्त्री पराधीनता को व्यक्त करने वाली परिस्थितियों को विस्तार दिया गया है। सलमा के माता पिता गरीब हैं वे विदेश में रहने वाली अपनी बहिन के भरोसे सलमा को उनके साथ भेज देते हैं। सलमा की खाला भी सलमा के खुशहाल जीवन के लिए ईमानदार कोशिश करती हैं परंतु कम पढ़ी-लिखी होने के कारण उसका विवाह डॉक्टर से नहीं हो पाता एक अच्छे परिवार में खाला उसका निकाह करा देती है। सलमा अच्छे से रहती है परन्तु अपने पति जमीर के साथ बाहर जाने आने की उसे इजाजत नहीं। उसकी सास सख्त मिजाज है। फिर जमीर भी कोई वास्ता नहीं रखता। एक दिन सलमा को जमीर की पॉकेट से एक लड़की का फोटो मिलता है वह इस बात पर ऐतराज जताती हैं सास कहती है मर्द जात तो रहते ही ऐसे हैं। वे सोचती है एक शर्त रखी थी अनवर ने शादी से पहले साथ रहने की उससे छुटकारा मिला तो इस नरक में आ गई। उसने बड़ी हिम्मत कर जमीर से बात करना चाहा परन्तु वहाँ से जवाब मिलता है। 'जमीर बोला मैं उसे घर में लाकर नहीं रखता यही क्या कम है। खबरदार अगर आज के बाद कुछ कहा। तुम्हें खाना कपड़ा चाहिए और क्या ? मैं जैसे भी चाहूँ रहूँ, तुम्हें कुछ भी बोलने का हक नहीं। सुनते ही सलमा के सारे शरीर में आग फैल गई।' जमीर ड्रग का धंधा करता है अतः पुलिस उसे पकड़ ले जाती है। 'सलमा ने बाप के घर गरीबी तो देखी थी पर बेईमानी, झूठ-फरेब और चरित्र हीनता नहीं देखी थी।' सलमा की घुटन बढ़ती जाती है वह जहर की शीशी पी लेती है। 'दूसरे दिन जब सलमा होश में आई तो उसने अपने को अस्पताल में पाया एक डॉक्टर बार बार उसका नाम लेकर पूछ रहा था अब कैसा लग रहा है। सलमा चौंक गई कौन है जिसे उसकी इतनी फिकर हैं। दूसरे दिन हाजी साहब (सलमा के ससुर) आये लेकिन डॉक्टर ने सलमा से पूछा कि वह कहाँ जाना चाहती है, सलमा ने अपनी खाला को खबर करने को कहा। सोशल सर्विस वालों ने सलमा से पूछा कि वह लड़कियों के होस्टल में रहना चाहती है क्या। सलमा, हास्टल में चली गई।' (८) प्रवास में सलमा जैसी कई महिलायें शोषण का शिकार हो रही हैं। बेवस इतनी है कि वे अपने वतन भी नहीं लौट सकती ऐसे कई महिलाओं के जीवन और उनका संघर्ष को अभिव्यक्त करना प्रवासी साहित्य की मानवता और वैचारिक धरातल पर सराहनीय कार्य है। परन्तु सलमा के बेगानी अजनबी दुनिया में भी लेखिका एक उम्मीद की किरण के रूप में हमें दिखाई देती है।

'एक मुलाकत'-उषा राजे सक्सेना द्वारा रचित कहानी है। इस कहानी में उषा जी बताती है कि रेलवे की महिला बोगी में यात्रा करते हुए उन्हें भारतीय समाज और संस्कृति के विविध रूपों के दर्शन होते हैं। जगह न होने के बावजूद बैठे हुए लोग कैसे दूसरे यात्रियों के स्थान देते हैं। लेखिका के सामने वाली बर्थ पर एक महिला अपने दो बच्चों के साथ निडर होकर यात्रा कर रही है सुबह जब उठी तो वह महिला वैसे ही बैठी थी 'मैं, उसे बाहों में भरकर कहना चाहती थी 'देखो तुम डूबना मत, मैं तुम्हें बचा लूँगी-उसके होंठ काँपे और उसने बाँसुरी

सी सुराली आवाज में कहा आप अदीब है, आप औरतों के बारे में लिखे। उनकी मजबूरियों के बारे में लिखे।'- मैंने फुर्ती के साथ पर्स में से अपना कार्ड निकाला और उसकी हथेली में दवा दिया, और उसके कान में फुसफुसाई 'मुश्किलों में मुझे याद करना मुझ पर ऐतवार करना मुझे अपने ऊपर हैरत हुई मैं कब से इतनी खबरदार हो गई।'।

कुछ दिनों बाद लेखिका के पास एक पत्र मथुरा से शबनम का मिलता है जिसमें लिखा था, 'बहिन मुश्किलों में आपको याद कर रही हूँ। जब तक यह खत आपको मिलेगा मैं खुदकुशी कर चुकी होऊँगी। मेरी गोद की बच्ची का गला मेरे खाँविंद ने घोंट दिया क्योंकि उस मासूम की शक्ल उससे नहीं मिलती थी। बड़ी बेटी को मैंने मुमानी के पास भेज दिया है। पता लिख रही हूँ आप जल्दी ही उसे किसी यतीमखाने भेज दीजिए जहाँ मेरा खाँविंद उसे पा न सके। मेरे पेट का बच्चा अल्लाह के दरबार में उससे फरियाद करेगा।' (९) लेखिका को पश्चाताप है कि वे उसे नहीं बचा सकीं। हाँ बड़ी बेटी को लंदन लाना चाहती है अभी वह उनकी माँ के पास भारत में ही रह रही है।

लेखिका लिखती है कि 'जहाँ तक मेरे अपने लेखन का संबंध है मेरी अपनी कहानियाँ मेरे अपने भोग हुए यथार्थ की परिणिति हैं, यानि जो कुछ मैंने देखा है जाना है, जो कुछ मेरे समय में हो रहा उसकी तकलीफ को मेरी कलम ने बड़ी बेवाकी और ईमानदारी से उकेरा है।-मेर पात्र उसी समाज से उठकर आते है जिस समाज में मैं रहती हूँ, साँस लेती हूँ। बिना भय के निडर होकर मैंने समाज के सच को लिखना चाहा है।' (१०) इस कहानी में लेखिका इस ओर इंगित करती हैं कि पत्नी कितनी खूबसूरत हो, आज्ञाकारी हो, परन्तु पुरुष समाज उसक चरित्र हनन करने से बाज नहीं आता यहाँ तक कि बेवजह शक करके अपने जायों को मारने में भी उसे कोई पाप का भान तक नहीं होता और समाज में ऐसी शबनम और उनके बच्चे रोज मारे जाते है। कोई हलचल नहीं समाज इसी तरह अनवरत चलता रहता है। कीर्ति चौधरी जो तीसरे सप्तक की कवयित्री भी है उनकी कहानी 'जहाँआरा' है जहाँआरा हैदराबाद से दिल्ली और दिल्ली से लंदन पढ़ाई करने के लिए जाती है और कुछ दिन रिश्तेदारों के पास रहने के बाद वे एक मकान में पेइंगगेस्ट हो जाती हैं। वे अब एक लाइब्रेरी में काम करती है परन्तु भारतीय समाज की वर्जनाओं में ही जीना पसंद करती हैं। सबसे कटी हुई केवल अपनी नौकरी और अपने कमरे में सिमटी हुई जी रही है। लंदन में किसी से कोई दोस्ती नहीं परन्तु उनके अंतर्मन में यह बात कही छुपी है कि वे भी आम स्त्रियों की तरह जीवन जी पाती। कई प्रेम निवेदन और शादी के प्रस्ताव वे ठुकरा चुकी हैं 'एकाएक उन्होंने वही पुरानी कहानी शुरू की जब वे उस तिमंजले मकान के ऊपर वाले कमरे में रहती थी, कैसे लोगों ने उन्हें पार्टी के लिए निमंत्रित किया था और कैसे वे बंद कमरे में साँस रोके बैठी रही थीं वे कहती 'सोचती हूँ यदि उस दिन दरवाजा खोलकर उन लोगों का निमंत्रण स्वीकार कर लिया होता तो आज मेरा जीवन कैसा होता'? उन्होंने यह सवाल मुझसे नहीं अपने आप से किया था मैं उनकी ओर देखती रह गई।' ११ कीर्ति चौधरी कहती है स्त्री मन के अंदर इतनी वर्जनायें पलती रहती है कि चाहे वे देश में रहें या विदेश में उन्हीं कुंठाओं में जीवन यापन करती है। दिव्या माथुर की 'सफरनाम' कहानी भाषा और शिल्प के स्तर पर सुगठित और कथा

के स्तर पर तो भारतीय आम आदमी के मानस में विदेश में रहने वाली महिलाओं की उच्छृंखल छवि पर तो ध्यान आकृष्ट करती ही है साथ ही विदेश में रहने वाली चेतनाशील महिला बार-बार लौटकर भारतीय पुरुषों की पुरुषवादी सोच और उत्पीड़न के जाल से महिलाओं को संघर्ष करने की चेतना का संचार करती है। अनूप का मित्र दिवाकर के विषय में कहता है कि 'चार साल अमेरिका में क्या गुजारे कि दिवाकरन अपने को महिलाओं के हर विषय का विशेषज्ञ मानने लगा था। कह रहा था कि ये महिलाएँ बिना घनिष्टता के ही आपके साथ पीने बैठ जायेंगी और थोड़ा ही पीने के पश्चात् आपके करीब आने लग जायेंगी, यदि आप पीछे हटे तो व्यंग से हँस पड़ेंगी किन्तु कही आप पहल कर बैठे तो सबके बीच थप्पड़ मार बैठेगी और थाने में रिपोर्ट करने पहुँच जाएँगी।' (१२)

कथा की नायिका विजया डेनमार्क से अपने घर भारत आती रहती है और यहाँ की महिलाओं के लिए कुछ करना चाहती है। विजया कहती है कि 'शायद आप मुझसे सहमत होंगे कि भारतीय पुरुष सामाजिक, मानसिक व व्यावहारिक स्तर पर वहीं का वहीं खड़ा है जहाँ वो सौ साल पहले था।' ८ विजय भारतीय दूरदर्शन के माध्यम से और अन्य महिला गोष्ठियों में महिलाओं की बेहतरी की सलाह देती है और अंततः भारतीय समाज की स्त्री मानसी और उसके बेटे की जिमेदारी अपने परिवार के सदस्यों को देती है। 'प्रवास में पहली कहानी' जैसी यह कहानी प्रतीत नहीं होती बल्कि कहानी कला के सारे तत्वों को लेकर यह कहानी कला की कसौटी पर सतर्क कहानी है। 'सलमा जैदी की कहानी 'काश' में लेखिका कहती है कि एक अल्हड़ कमसिन लड़की जो जीवन के प्रति सकारात्मकता से लवरेज है परन्तु जीवन की सच्चाई कुछ और है जैसे जैसे जीवन आगे बढ़ता जाता है वह तिल तिल कर मरती जाती है ' उस दिन वह कुछ कुछ मरी जब उसके पिता ने अपने से बहुत ऊँचे खानदान के इकलौते वारिस' के साथ उसे ब्याह दिया। कुछकुछ वह तब मरती रही जब हाई सोसाइटी में मूव करने वाली सास ननद ने जाहिल गवार कह कर जीना दूरभर कर दिया। कुछ-कुछ उस दिनमारी जब रात में देर से घर आए पति से शिकायत करने पर सुनने को मिला इस घर की बहुएँ पति से सवाल-जबाब नहीं करती। वह उस दिन भी मरी जब बच्चों ने कहा कि हमारे आने जाने पर रोक टोक मत किया करो। वैसे उसके जीने या मरने में किसी को दिलचस्पी थी भी नहीं।' और अंत में उसे कैंसर हो जाता है परंतु तब भी वह अपने पति से यह बात कि वह गंभीर रूप से बीमार है। किसी को मत बताइएगा और असमय ही मृत्यु को प्राप्त हो जाती हैं लेखिका भारतीय समाज की संस्कारों में बंधी महिला की ऐसी सच्चाई पर प्रहार करती है।

'खदिमा' अनवर नसरीन की ऐसी कहानी है जिसमें विदेशी जमीन पर रह रही अधेड़ उम्र की महिला अपने जीवन से निराश होकर स्वयं चेतना वान होती है और जब वह अपने जीवन के विषय में स्वयं निर्णय लेने लगती है तो सारे नाते रिश्ते कैसे टूट जाते हैं क्योंकि पति हो या बच्चे उसके कार्यों को सुचारू रूप से सम्पन्न कराने भर की आवश्यकता है माँ। महिला चाहे घर में रहे या पति-बच्चों के साथ कहीं बाहर घूमने भी जाये उसका कार्य क्षेत्र है केवल परिवार की खिदमत करना। 'अचानक मेरी को अपनी अहमियत के साथ अपने इंसान होने

का अहसास शिदत से हुआ। उसने अपने लिए एक छोटा सा फ्रॉक, जूतों का एक जोड़ा और छोटा मोटा सिंगार का सामान खरीद लिया।- उसने सोचा अगर जिम उसकी तरफ आँख उठाकर नहीं देखता तो क्या हुआ ? वह खुद भी तो अपने सरापे को देख सकती है।' (१४) और मेरी घर छोड़ देती है और घरेलू नौकर होकर अपना जीवन यापन करती है। 'स्वर्ण तलवार' की कहानी 'बीजा' प्रवासी जीवनी एक बड़ी विदारक सच्चाई से हमारा सामना कराती है। काम की तलाश में अली विदेश चला जाता है पत्नी अपने बच्चे और बूढ़ी सास का पालन करती है और उम्मीद करती है कि उसका पति उसे भी अपने साथ ले जायेगा। फिर होता भी है ऐसा कि अली सलमा को अपने साथ विदेश ले जाता है परन्तु उसके बेटे का बीजा नहीं बन पाता। सलमा विदेश में अपने बेटे के लिए रात दिन तड़पती रहती है और अंत में उस प्राण पखेरू उड़ जाते हैं और वह अपने बेटे से नहीं मिल पाती। प्रवासियों के साथ हमेशा उसके अपने प्रिय जनों के विछोह का दर्द सलता रहता है 'कहूँ तो कैसे कहूँ' प्रियवदा देवी मिश्रा की कहानी में सार्वभौम सत्य पर ध्यान आकृष्ट किया गया है जिसमें 'बहू' जो 'डिप्टी साहब की पत्नी' है कितने नाज-नखरों से जीवन यापन कर रही है और जिस माँ ने उसके पति को डिप्टी साहब बनाया आज उसके जीवन यापन का मामूली सा खर्च बहू को कितना भारी पड़ रहा। यहाँ सास का खर्च ही नहीं उसके संस्कार उसकी नैतिकता उसके आचार विचार सब बोझ हो गए हैं।

हिन्दी की चिंता केवल भारत वासियों को ही नहीं है बल्कि सुदूर रह रहे हमारे लेखकों को इसकी चिंता अधिक है। दिव्या माथुर जी लिखती हैं कि 'सलमान रश्दी के इस कथन कि भारत में महत्वपूर्ण लेखन नहीं हो रहा, ने मुझे झकझोर के रख दिया। मैंने फैसला किया कि भारतीय साहित्य को विदेशों में लाना बहुत जरूरी है। अपनी छोटी और अल्प सुविधाओं के रहते मैंने अंग्रेजी में दो कहानी संग्रहों का संपादन किया। समुद्र में एक बूंद सा-मेरा प्रयास बिना आवाज के वह गया। अनुवाद के अभाव में आज भारतीय लेखन विश्व के सामने नहीं आ पा रहा।' पृ० ३५९ दिव्या माथुर प्रवासी साहित्य के प्रति यह सकारात्मक रुख हिन्दी साहित्य को विदेशों में फैलाने का सफल प्रयास है। प्रवासी साहित्य पर संगोष्ठी के कारण आज बहुत सारे लोग प्रवासी साहित्य को पढ़ने के लिए प्रेरित हुए हैं। प्रवासी साहित्य पर कुछ प्रश्न उठाये जाते होंगे उनकी भाषा अथवा शिल्प को लेकर। हाँ ठीक है कहीं-कहीं भाषा कुछ कमजोर और शिल्प सपाटबयानी सा हैं परन्तु इसका आकलन ऐसे करना चाहिए कि हिन्दी का लेखक पृथ्वी के किस किस कोने में बैठकर हिन्दी की सेवा कर रहा है। आज प्रवासियों के माध्यम से हमारी संस्कृति और जीवन मूल्य समग्र पृथ्वी पर बिखर रहे हैं और हम भी साहित्य के माध्यम से विभिन्न संस्कृतियों और मूल्यों से परिचित होंगे। आज सुदूर बैठा भारतीय हिन्दी की सेवा कर अपने कर्तव्य को निभा रहा है।

समग्रतः संग्रह में इक्कीस कहानियाँ संग्रहीत हैं। जिनमें लेखिकाओं ने महिलाओं के जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं को दर्शाया है। उनके संघर्ष और उत्पीड़न के साथ ही चेतनवान होती महिलाओं की छवियाँ यहाँ अधिक दृष्टिगोचर होती हैं। समाज चाहे भारतीय हो या विदेशी महिलाओं के उत्पीड़न के भी भारतीय और विदेशी तरीके हैं जिनको कथा लेखिकायें बखूबी चित्रित करती हैं।

संदर्भ ग्रंथ

- १-पत्रिका- वर्तमान साहित्य-कुंवर पालसिंह, नमिता सिंह (संपादक) जनवरी-फरवरी २००६, पृ० ४५
- २-स्नेह ठाकुर : पूरब पश्चिम- २००८, पृ० ६७
- ३-प्रकाश नारायण तथा प्रज्ञा नारायण शर्मा, भारत में सामाजिक समस्यायें (२०००), पृ० ८१
- ४-संपादक उषा वर्मा, प्रवास में पहली कहानी, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, भूमिका से
- ५-वहीं, अतिया खान भिखारिन, पृ० २३
- ६-वही, अमृत तोषी : सर्द रात का सन्नाटा, पृ० २९
- ७-वही, इरा सक्सेना : कहानी कही खो गई है, पृ० ३७, ३८
- ८-वही, उषा वर्मा : सलमा, पृ० ४६, ४७, ४८
- ९-वही, उषा राजे सक्सेना : एक मुलाकात, पृ० ५३
- १०-पत्रिका-वर्तमान साहित्य-कुंवर पालसिंह, नमिता सिंह (संपा) जन०, फरवरी २००६, पृ० २१६
- ११-संपादक उषा वर्मा, प्रवास में पहली कहानी, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, वही, कीर्ति चौधरी : जहाँ आरा
पृ० ५९
- १२-वही, दिव्या माथुर : सफरनामा पृ. ६०, ६१
- १३-वही, सलमा जैदी: काश, पृ० ९०
- १४-वही, अनवर नसरीन : खदिमा, पृ० ९६
- १५-पत्रिका-वर्तमान साहित्य कुंवर पाल सिंह, नमिता सिंह जनवरी, फरवरी, २००६ पृ० ३५९